।।श्री राम ।।

जानकी सैंवर

जनी जनार्दन कृत

प्रसंग पहिला

श्री गणेशायनम: । श्रीसरस्वत्यैनम: । श्रीमज्जानार्दन गुरुभ्योनम: । श्रीरामात्मने नम: । कुजंतं रामरामेती मधुरं मधुराक्षरं । आरुह्य कविता शाखा वंदे वाल्मीक कोकीलं ।१ । राम रामेति रामेति रमेरामे मनोरमे । सहश्रनाम त्ततुल्यं रामनाम वरानने । रामाय राम भद्राय रामचंद्राय वेदसे । रघुनाथाय नाथाय सीताया: पतये नम: ।१ । गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरा: । गुरू रेकपरंनास्ती तस्मै श्रीगुरवे नम: ।१ ।

ॐ नमो गणनायका । ब्रम्ह विष्णु ईशकायका ।
कैवल्यपद प्रदायका । विधायका । सुविद्या ।१ ।
अज्ञान तमोपहभास्करा । प्रबोध समुद्रोल्हास निशाकरा ।
संभूतिदु:ख विघ्नहरा । लंबोदरा । तुज नमो ।२ ।
देवा तुझी दिव्य दृष्टी । कारुण्यामृतें रसवृष्टी
वोळोनि मन्मन चातक तुष्टी । जी धुर्जटी । पै करु ।३ ।
यैसें परीसौनि बाळक वचन । तुष्टले स्वामि गजानन ।
दिधला वर पुर्ण संपुर्ण । ग्रंथ निर्माण । करणार्थी ।४ ।
लाहुनि गजमुख प्रसंन्नता । प्रेमें जनार्दन कविता ।
उल्हासु धरि चित्ता । जगन्माता वर्णिनें ।५ ।
आतां ॐ नमो जगदंबिके । स्वकीय चरणानत पालाके ।
भवभय शोक निवारके । जय हारके । दुर्बुधी ।६ ।
ब्रह्म विष्णु महेशाना । तुं हो अवर्ण्य सुरगणा ।
तेथ अल्पमति जनार्दना । पैं वर्णना कें मा तु ।७ ।
परिसोनी अपत्य विनवणी । अंबा आनंदलि भवानी ।
दिधला जनार्दना लागुनि । अंत:रणी सौरसु ।८ ।

अंबा प्रसाद पत्कज पराग। पावला मन्मनो भृंग।
मग ग्रंथार्थी अति चांगु। आदरु सत्वांगु। उदैला।९।
तेणें आनंदे करुनि। प्रवर्तलां श्रीगुरुस्तवनि।
जेवि बालकाउच्चस्छरत्नि। अति प्रयत्नि। हव्यासु।१०।
ॐ नमो श्री सद्गुरु। कैवल्य दानि जो उदारु।
सर्वव्यापक निरंतरु। वरदवरु। सकळां पैं।११।
देवा तुझा प्रसाद वसंतु। पावलियां मन्मन वनाआंतु।
स्वगुणें सुखी करितु। हितोपकृतु सज्जना।१२।
बुधीवल्लि सकोमळि। पद पुष्पें अर्थ फळिं।
लवोनि येति बहलि। संत मंडळिं। सुखासि।१३।
वाचा कोकिळ पदप्रांसीं। वदतिल अति उल्हासिं।
परीसतां श्रोत्र श्रवणासि। अति पाडेसिं संतोषु।१४।
स्वकिय हृदय पंकजिं। मानस मधुकर रमे सहजीं।
यैसें करावें श्री गुरुजीजी। पैं स्वकार्जी अनुरुपु।१५।
यैसें परिसोनियां विनवणें। जनार्दना स्वामी म्हणे।
प्रारंभू करी अंत:करणें। ग्रंथरचने अगाधु।१६।
यैसें गुरुसोमवचनामृतकर। श्रवणव्दारा प्रवेशले अपार।
मानस सोमकांतिं पाझर। बुधीचे थोर। पावलें।१७।
तेन संवरत हृदयस्छिति। ते वदनद्वारा बाहिर निघति।
ते शब्दपणें अवेवति। पैं बुधीमंतिं। परीसावें।१८।
आतां नमन संत जना। जे निवासी भूतज्ञाना।
छेदक भवबंधना। जनार्दना। स्वदृष्टी।१९।
जे नित्यानंदैकधाम। जे भक्तजन पुर्ण काम।
जयां भगवत् चरणारविंदिं। नी: सीम भक्तिप्रेम। अनन्यभावें।२०।
जे ज्ञानभूषणमंडित। जे दुर्मनोभावना खंडित।
जे मानसिं अखंडित। पैं चिंतीता स्वरूप।२१।
तयां माझा नमस्कार। अति नम्रता उपच्यारु।
अस्मत् ग्रंथी सादरू। करुनि आदरू परीसिजे।२२।

तुमचां चित्तिं सावधानता। जरि उपजे अस्मत् पुर्ण पुण्यता।
तरि परमार्थ फलिंव्याप्ता। कथालता। वृधी पावे।२३।
यैसीया परिसोनि मृदु वचना। संत म्हणति जनार्दना।
पैं निरोपिं शब्दरत्ना। करि कामना। पूर्ण हे।२४।
यैसें लाहुनि संतवचनामृत। अतिशें जनार्दन तृप्त।
प्रेम भावेंसिं वदत। वोसंडत। उद्‌गारिं।२५।
धालेपणें आनंद भरिता। अनुवादत श्रीरामकथा।
जे शंकर वंदी माथा। होय सांगता शक्तिसि।२६। ध्रु।
आईका रंम्य रामकथा। त्रैलोक्यपावन पुण्यसरिता।
भावें श्रवण स्नान करितां। सायोज्यता रोकडिं।१। छ।
जे कथा तापत्रय शमिनि। दुर्भव दुरीत दमीनि।
जे श्रीराम गुणानुवादिनी। आनंदिनि। विश्वरुपा।२७।
जे सकळां कथां वरपावनि। जे दुराशा विध्वंशीनि।
जे संसार तप्त संजीवनी। जे पैं अवनि। तारका।२८।
जे वर्णीतां चतुरानना। पाताळिं सहश्रवदना।
लक्षा न ये सुरगणा। जे ईशाना। सुख करि।२९।
जे सर्वांमाजि सारभूता। जे पवित्र करि कळिमळव्याप्ता।
जे पापवि ब्रह्म पदता। तेहे कथा। रामायणी।३०।
जेथ रामनाम गुण महिमा। श्रोत्र मनःश्रवणा अति प्रेमा।
उपजोनियां पुर्णकामा। निजधामा। पाववि।३१।
ते हे श्रीराम कीर्तनीं। श्रीराम पत्कज षट्पदजनीं।
प्रवेशोनियां श्रवणी। अंतःकरणीं। सुखकरू।३२। छ।
परीसा जानकि सैंवर। भावकथा अति मनोहर।
भावना रूपें अहिकपर। पैं वर। वरदायक।३३।
आतां यया उपरि। कथा द्वैतार्थ मनोहरि।
भरथ खंडामाझारि। अवनी वरि जंबुद्विपीं।३४।
वैदर्भ देसिं विदेहपुरी। आत्मा विदेह राज्य करि।
श्रुध सत्वात्मक व्यापारिं। लोकाचारी। वर्तणुक।३५।

नगर वर्णीतां वर मनोहर। असंदेह देह पूर।
रक्षक अभीमानि सधर। अति वर विर चतुष्टय।३६।
गौण नाम जनक नृपु। राज्य करि सानुकंपु।
तेथ अस्मत् वर्णनारोपु व्यर्थ आरोपु। किमर्थ।३७।
या लागी नगर वर्णनी। न रिघेंचि परीसा विनवणी।
श्री रामगुणानुवादनी। होईल म्हणौनि। विलंबु।३८।
असो ते विदेहपुर देहिं। प्रगटलि परमाते वैदेहिं।
पावन करावया महि। पैं भव अहिनाशना।३९।
ईहामुत्र फळ भोग विरागीं। जैसि सुविद्या निफजे चांगी।
तैसि श्रीराम आत्मतंन्वंगी। जनकांगीं प्रकटलि।४०।
आन पाहातां कैसि गमली। काय विश्वजन माउलि।
देखोनि भवाझी तातलीं। तयां पावलि। सुखदानि।४१।
किं श्रीराममानसमुकुळा। विकाशना चंद्रकळा।
किं विष्णु चरण प्रेमळा। सिंधुबाळा। अवतरलि।४२।
किं श्रीराम पत्कजीचा रत: परागु। सेवावया धरिला देहविभागु।
किं अज्ञान जना आत्ममार्गु। अति निलागु। दर्शना।४३।
किंवा सुरगण मानस कमळा। विकाशकारिणी भानुकला।
किं राक्षस कुळ तमा शबळा। छेदन अबला। पातलि।४४।
यैसि प्रगटलि विदेह तनया। जे बोलीजे आदिमाया।
पैं त्रैलोक्य तारावया। दिव्यकाया। जानकीं।४५।
तो सुखकारी धन्य दिवसु। सुरनर मानसा उल्हासु।
जेवि उदैल्यांचंद्रकळांसु। सिंधु जळांशु उचंबळे।४६।
परमधन्य तो विदेह राजा। जेय प्रगटलि आदिबिजा।
जे पैं बोलिजे पद्मजा। देवकाजा। मैथलि।४७।
भाग्य जनकाचें समर्थ। वदतां वाचेसि अकथ्य।
जया विश्वमाता अपत्य। स्वरुपें सत्य। लाघली।४८।
सितायोगें तो जनकु। पावैल विश्वनायकु।
भक्तिसंगें सज्जन लोकु। पैं परलोकु। पावतु।४९।

यैसि ते जनक बाळा। लावण्यें वाढे विशाळा।
जेवि निर्मळा चंद्रकळा। तिथी प्रबळा। वृधी पावे।५०।
ते क्रीडतां निज सदनि। परीवृत सखिजनीं।
जनका आनंदता मनि। पाहातां नयनिं। न सांटे।५१।
अवलोकितां विदेह राया। सगुण सुंदर अवनि तनया।
सुमन दृष्टी आन व्यवसाया। करावया। न धावें।५२।
जैसा तो तत्त्ववेत्ता। विसरोनि इंद्रियादि व्यवहारता।
ध्यानें चींति तुर्पावस्छा। तैसा सिता। विदेहि।५३।
का सुंदर सगुण सुलक्षणीक। वृधपर्णी येकुलतें येक।
जननि न विसंभे बाळक। तेवि जनक। जानकिये।५४।
का कृपणाचें अंत:करण। न विसंभे ठेविलें निजधन।
तैसें जानकि निधान। जनकु गहन। न विसरे।५५।
असो ते यैसिया परि। तया जनकाचां निजमंदिरिं।
प्रकटलि आदिकुमारि। जे श्री हरि वरप्रीया।५६।
जनकु रत्नाचा आगरू। सिता लावण्यरत्न तारुं।
ग्राहकु आत्मा रघुविरू। येईल वरू। वरावया।५७।
जे सामुद्रिकांचे मंडण। जे गुणाचें जन्म भवन।
जे सकळ भूषणा भूषण। ते वर्णन। केवि वाचे।५८।
जे वैष्णवि आदी लक्ष्मी। ते अगम्य निगमागमि।
जियें चतुराननु निजधामि। अनंत नामि। वर्णीतु।५९।
जे विष्णुचि निजशक्ति। जियेतें सुरनर पंनग स्तविति।
जे कां, वंद्य त्री जगति। वरदमुर्ति। जनार्दना।६०।
ते जानकि जनक दुहिता। परम लावण्यें पुर्ण भरिता।
निजधामिं खेळतां। जगन्माता। नधाये।६१।
जीचिं ब्रम्हांडें कोढलिं। रचि उतरि उतरी उतरडी।
बाउल्या चौऱ्यासि लक्ष रुपडीं। पैं परवडि। खेळवि।६२।
जे अनंतां शक्तिचि स्वामिणी। जे परमात्मया रामाचि रमणौ।
विश्व जन मनमोहनि। जे स्वामिणी जनार्दना।६३।

जे अनंत रूपें रुपसा। जे विश्व नयन डोळसा।
स्त्री पुं नपुंसक यैसा। पाडिवसा। चतुर्विध।६४।
यैसि ते जनक नंदनि। जनार्दनाचि निज जननि।
संगे सखीया सुवासीणी। दिव्ययोगिणी। अवतरली।६५।
तया समवेत जानकी। नाना लिला सुकौतुकीं।
अप्राकृतें वर वर कीं। खेळे नेटकिं। खेळणीं।६६।
नवल रचनें घरकुलीयांचें। नाम ठेवि वैकुंठाचें।
माजि कल्पी नीजसुखावें। श्री रामाचें मंदीर।६७।
तेथ हंस तुळीके वरियां। कल्पना बैसवी रामा स्वामियां।
सांगे उपचार सखिया। आणा गोसांवीयां लागुनि।६८।
आवाहनादि उपचार। शोडषहि परिकर।
पुजि सद्भावें रघुविर। स्तुति मनोहर। नृत्यादि।६९।
मग जोडुनियां करांतें। साष्टांगीं करि नमनातें।
उठोनि घालि आसनातें। स्वस्छें चितें पद्मासन।७०।
तेथ हृदय पंकज सेजारिं। श्रीराममुर्ति अति सुंदरि।
चिंति मुद्रा आगोचरि। पै अंतरी सुखात्मका।७१।
तेणे आनंद सुख भरें। देहादि स्मरण विसरे।
मग सखिया परम बळात्कारें। आणि विस्मरे। जागृति।७२।
तवं निदसुरियां नवल कैसें। परमानंदे परमधोषें।
म्हणे जय जय श्रीराम यैसें। चितोल्हासें। जानकी।७३।
म्हणे जयजयजि श्रीरामा। सुंदरवर मेघश्यामा।
भक्त जन पूर्ण कामा। तुं विश्रामा विश्वाच्या।७४।
ध्यानि ध्यात श्रीरामराम। चिंतनि चिंतति श्रीराम।
वदनि उचार श्रीरामराम । नयमि राम। निरक्षी।७५।
श्रवणी श्रवण राम राम। भोजनि जीवनी राम राम।
आसनि शयनि राम राम। धानी कामिं। रामचि।७६।
येतां राम जातां राम। खेळतां खेळ राम राम।
बोलतां हासतां राम राम। सखियां सांगत राम राम।७७।

सखिया म्हणति नवल कैसें। सितेसि श्रीरामाचें पीसें।
खेळतां म्हणति लिळावसे। कोठें असे। तो रामु।७८।
यैसें पुसति सखिजने। तव जानकि बोले हास्य वदने।
सर्व व्यापकु रामु जाणें। सकळ करणें। रामाचें।७९।
रामु जन रामु विजन। रामु वन निरंजन।
सर्वसर्वि अखिल जाण। कार्य कारण। रामुचि।८०।
धाता रामु विधाता रामु। कर्ता रामु भर्ता रामु।
दाता रामु देता रामु। आत्मारामु। सर्वांचा।८१।
यैसें जानकिचें वचन। परिसोनि सखियां समाधान।
म्हणती नव्हे हे सामान्य। परनिधान। निजशक्ति।८२।
ते जाणितलें जानकीया। मग म्हणेतियां निज सखियां।
झनि विरहिणी वचना ईयां। आनाठाया न बोलीजे।८३।
यैसी ते जनक तनया। अवतरलि सुरकार्या।
बंधन त्यांचें तोडावया। पैं धावया वैष्णवि।८४।
ते सर्वज्ञ जनकबाळा। भविश्यानुरुप खेळे खेळां।
संहारण राक्षस कुळां। धरि वेल्हाळा। शरचाप।८५।
करिं धनुष पृष्टी भाते। तैसेंचि सकळां सखियांतें।
काष्ट खर्गे प्रजीत हातें। दारू अश्वांतें। आरूढति।८६।
सखियांसि अति सप्रेमें। अंतर आवडिचेनिसंभ्रमे।
म्हणे जींतीले जींतीले रामे। श्री राम नामें गर्जत्ति।८७।
विस्मीत चित्त जनकाचें। देखोनि खेळणें जानकीचें।
म्हणे प्राकृत्त नव्हे रूप इचे। करि जीवाचें नित्य लोण।८८।
ते माहामाया वैष्णवि। वैष्णव आवडति जीवीं।
तयातें पुजि मनोभाविं। अति गौरविं। गौरवि।८९।
पढीयंति भक्त भागवत। सज्जन निजदास समस्त संत।
जे श्रीराम नाम कीर्ति पढत। तेहि आवडत। जीउ यैंसे।९०।
देव ब्राह्मण पुजन। अतिथिं अति रोचन।
वेदशास्त्र निषण। जीव प्राण। पढीयंति।९१।

जनका येकुलति येकि। पुत्रस्थानि पैं जानकि।
तारक अहि किं परलोकीं। अति विसेखिं। आवडे।९२।
म्हणौनि क्षणा क्षणा तियेतें। वेगळे न करी हृदयातें।
प्रेमें आळींगुनि निज हस्तें। पैं वदनातें। चुंबीतु।९३।
म्हणें हे जानकि आमचा पीता। जानकि आमचि माता।
जानकि आमचि कुळ देवता। परत्रता। जानकि।९४।
जानकी दैव आमचें। जानकि जीवन जीवाचें।
जानकि तारूं भवार्णवाचें। पैं परत्रीचें। निज धाम।९५।
जानकी आमचें कुळ गोत। जानकि आमचें सुवित।
जानकी आमचें निश्चीत। पैं जीवीत। जानकी।९६।
यैसें हरुषें निर्भर। बोसंडे जनकाचें अंतर।
ध्यानि ध्यात निरंतर। भाग्य गोचर। जानकि।९७।
आणा सकळा सुहृदांसि। आवडे जानकी जीऊ यैसी।
ईतरा नगर जनासि। प्राण यैसी। विसेखें।९८।
असो यैसी ते जेष्टा। सकळ वरीष्टां वरीष्टा।
करावाया धर्म प्रतिष्टा। वयसा अष्टां। वरुणाचि।९९।
दिव्य रूप ते सिता। दिव्य अलंकारिं मंडिता।
पुर्णापुर्ण पूर्ण भरीता। जे त्वरिता। माहा लक्ष्मी।१००।
जे जनार्दनाचि जननिं। जे जानकि विश्वमोहिनी।
तया विदेहाचा निजभुवनि। जीव जीवनि। क्रीडतिसे।१०१।
जनार्दनु विनवि संता। हे पावन राम कथा।
पैं परीसावि दत्त चित्ता। तरी सायोज्यता रोकडि।१०२।

प्रसंगु।१।छू।

प्रसंग दुसरा

।धृ। परीसा जानकी सैंवर। कथा पावन परीकर।
भवदुख दुरीत हर। जे परपार। पाववि।१।छ।

आता यया नंतरे कथा। परीसावि दत्तचित्ता।
जनक मंदिरा जाहला येता। भवभय त्राता। फरशधरु।१।
जो भृग वंशीं परिकरु। जो पैं शष्टम अवतारु।
करुनि क्षत्र कुळां संहारु। भूमीभारु उतरीला।२।
जो शंकर प्रसादें सानंदु। जाहाला सकळ विद्यासीधु।
त्रींबक लाहुनि प्रसादु। वधीला अगाधु। सहस्त्रार्जुनु।३।
जो पुर्णांश माहा विष्णुचा। पुत्र जमदाग्नि रेणुकेचा।
परिपाळकु गोब्राम्हणाचा। भृगु वंशाचा। उधरणु।४।
जो सकळ तेजाचें तेज। जो सकळ बिजाचें बिज।
जो परम निजाचें निज। तो सहज। पातला।५।
माथां जटा दिव्य प्रभा सोज्वळा। कर्णी कुडलां दिव्य झळाळा।
द्वादश टिळे अति विशाला। दंड कुमंडळ मेखळा। यज्ञसुत्र।६।
अग्नीधुत धोत्रवोलि। देह मंडीत रुद्राक्षमाळीं।
त्रीपुंड रेखीला निज भाळी। अक्षमाळीं। जपमाळा।७।
सिवविद्या पंचाक्षारी। वदनि अखंड उचारी।
धनुष बाण निज करि। चरणचारी। गमन।८।
तपोतेजे तपोनीधी। बोळगति रिधी सिधी।
परमानंद सुधाब्धी। पै निरवधी। भार्गउ।९।
अनंत शक्तिचा गोसाविं। प्रवेशला विदेह गाविं।
संगे सुपात्रें अघविं। जे बंरवि। रुषीवृन्दे।१०।
जे वेदशास्त्र पारंगत। जे तपोधनें समर्थ।
जे ब्रम्हविद्या पुर्ण भरीत। ते समवेत खोलति।११।
अनंत सिध संगें मुनि। पैं पातला राजधानि।
जनके देखिला दुरूनि। वेगें धावोनि। नमीयला।१२।
पडे साष्टांगीं दंडवता। चरणावरि ठेवि माथा।
म्हणे जय जय जगंनाथा। जी भवत्राता। भार्गवा।१३।
जय जय शरणागत वत्छळा। नीज दासांस प्रेमळा।
विश्वजना तुं जीवाळा। माया लिळा अवतारु।१४।

जय जयजी कल्याण रामा। जय जयजी पुरुषोत्तमा।
जय जयजी परम धामा। जी उत्तमा। पुरुषा तुं।१५।
जय जयजी मेंघ स्यामा। जयजयजी आत्मयांरामा।
सिणलीया संसार श्रमा। तुं विश्रामा। भार्गवा।१६।
जय जयजी पुर्ण कामा। जय जय नि:काम कामा।
अगाध तुझा महिमा। श्रृति सीमा न बोलवे।१७।
जय शड्गुणैश्वर्य संपन्ना। नमन तुझया चरणा।
नमो आदिनारायणा। जर्नादना। दातारा।१८।
यैसा परम सात्वीकें। स्तविला फरशधरु जनकें।
येरे उचलुनियां परम तोषें। सामरस्यें। आळंगीला।१९।
नाभीकरे जनकातें। स्पर्शीले रामें सर्वांगातें।
येरे सप्रेमे बहुतें। निज मंदिरातें। आणीयला।२०।
प्रवेशतां राज मंदीरीं। धनुष उभें केलें द्वारीं।
भाते ठेविले। राजत कुसरि भारवंटी।२१।
सकळां रुषीं समावेत। जनकु रामातें भीतरि नेत।
सींहासनि बैसवित। रुषीं देत दीव्यासनें।२२।
मग शोडशोपचारिं। अनुक्रमें पुजा करि।
दिव्य वस्त्रीं अळंकारिं। बहुतां परि। तोषविलें।२३।
नृपें जोडुनिया करातें। विनवीलें भार्गवातें।
म्हणे स्वामि विज्ञायनेतें। कृपावंतें। परीसावे।२४।
अनंत जन्में परीयेसिं। जरी घडेलिया असेति पुण्याच्या रासी।
तरी तुमचें नाम ये मुखासि। की तो तुं आम्हासि। आळंगीसि।२५।
तरी माझया दैवां। पारु नाहि जी राघवा।
स्वामि देवांचया देवा। जय भार्गवा। सग्दुरु।२६।
कृपा करुनियां स्वामि। बीजें केलें जि तुम्हीं।
उधरिला दासजी मिं। समागमि रुषीवर्य।२७।
तरी कृतार्थ जाहालों जगदीशा। तु विश्वाचा कुवांसा।
अंगीकारी या निजदासा। चरणी परेशा। रक्षावें।२८।

यैसें जनकाचें वचन। परीसोनियां भावपुर्ण।
हास्य करुनि भृगुनंदन। आश्वासन दिधलें।२९।
मग रामु म्हणे विदेहासि। भला भला सत्वरासि।
पुर्ण अंतर्निष्ट होसि। म्हणौनि भेटिसि आगमन।३०।
आम्हीं भक्त वेळाईत। भक्त आमचें दैवत।
भक्त जें जें सांगत। तें पैं निश्चित। पुरवावें।३१।
आम्हां अवतार धरणें। तें भक्तरुण फेडणें।
भक्तांचें दास्य करणें। येणें कारणें। विदेहा।३२।
पाहे बळीचें द्वार रक्षणें। अंबरुषीचे खांदे फेडणें।
भक्तरुण उतिर्ण होणें। सत्यजाणें। सुनृपा।३३।
म्हणौनी आमचि भक्तवृंन्दे। जो पैं दुखविल अहंमदें।
त्याचि पाडितिल कबधें। पैं सानंदें। येमदुत।३४।
म्हणौनि आमचियां भक्तां। जे सभ्दावें देति मान्यता।
तयां आम्हीं वाहों माथां। यथार्थता। नृपोत्तमा।३५।
आतां विदेहा परीयेसीं। आम्हां जाणें निज आश्रमासि।
म्हणौनि चिदानंद वचनेंसीं। सकळां रुषींसीं। उठीयला।३६।
आले मंदीरा बाहिरी। तव धनुष न दिसे बाह्यद्वारिं।
भार्गउ विस्मयो करी। अघटित परी। दिसतसे।३७।
म्हणे मज वांचुनि माझें धनुष। उचलि यैसा नाहिं पुरुष।
वेगळा करुनियां महेष। जो कैळास। नायकु।३८।
तरी तो येथ ईये काळीं। नाहिं आला चंद्रमोळि।
आन स्वर्ग मृत्यू पाताळिं। नाहिं बळि। उचलिसा।३९।
कृपालुवे तेणें ईशानें। आम्हां दिधलें सिस्यपणें।
तेणें न पुसत नेणें। हें कल्पनें। महा पाप।४०।
राम म्हणें विदेह नृपा। धनुष विचारणा पाहापां।
येरु सेवकां वरीया कोपा। चढला। कृपा सोडुनियां।४१।
धनुष काय रे जालें। कवणें उचलुनियां नेलें।
किंवा अंतरीक्ष गेलें। असतां ईतुलें। रक्षण।४२।

सेवक म्हणति जी जी देवा। आम्हीं जाणें जाणो धनुष गौरवा।
तें न ढळें सकळां देवां। पै मानवां। पन्नगासि।४३।
तेथ कवण केवा ईतराचा। परी चमत्कार नवलाईचा।
तव रुषी म्हणति हा हा साचा । पै धनुषाचा । मागू दिसे ।४४।
येक म्हणति रेखा होय। वोढित नेलें आहे।
काचनिबंध भूमीका हे हे। फुटलि काय। नदीसे हे।४५।
तो मागू पाहात प्रबळ। राजबीदी आले सकळ।
तव ते जानकी वेल्हाळ। संगें दळ। सखियांचे।४६।
पैं धनुषाचें करुनियां घोडें। वरियां आरुढलि असे कोडें।
काष्ट अश्वी मुलि पुढें। सव्य वाम देव्हडें। खोलति।४७।
परमानंदें उभयाबीदी। धावति वोढित विपरित संधी।
संगे अनंत शक्तिमादि। घे घे शद्धिं। गर्जति।४८।
ते देखोनिं तटस्छ भार्गव। म्हणे जय जय शिव शिव।
हे होय मुळशक्ति सावेव। अति सदैव विदेहि।४९।
हे वैष्णवि माया शबळा। अवतरलि अति विशाळा।
विश्व थोडें ईयेच्या खेळा। ईये बळा। धनुष कें।५०।
हे सामान्य नव्हें पाहातां। प्रकटलि विष्णुकांता।
सप्तम अवतारु विचारिता। पै निश्चींतां। प्रकटला।५१।
हें त्रीबक त्रयंबकाचें। लिला खेलणें केलें ययाचें।
हे तव सामर्थ्य विष्णुवें। तत्सक्तिचें। हें रुपडें।५२।
तरी वीष्णु अवतरला क्षीति। यैसि जाली निश्चिंति।
मग म्हणें आपुला चिर्ति। होय आदि शक्ति। जानकि।५३।
जनकातें म्हणे भार्गव। धन्य धन्य तुझें दैव।
जें तुझां ठाई स्वमेव। लक्ष्मी सावेंव अवतरलि।५५।
आरे हे सामान्य नव्हे भूपति। हे मूळ माया प्रक्रुति।
माहाविष्णुचि निजशक्ति। सांख्य गाति जीयेसि।५६।
आगा इयेचि मूळ कथा। तुझ सांगों नृपनाथा।
हे सर्वादि तत्वता। वीश्व भरिता। माहालक्ष्मीं।५७।

ईयेचि परम उपास्ती। करी पद्माक्ष नृपति।
तो मेरुचां पश्चम प्रांतिं। पद्मावति। पाटणी।५८।
तेणें तपाचेन सायर्थ्ये। प्रसन्न केलें माहालक्ष्मीतें।
ते प्रसंन होउनियां तयातें। म्हणे वरातें। माग माग।५९।
आरेरे नृप नंदना। वरू मार्गे जाहलियें प्रसंना।
जे असैल मन कामना। ते गहना। बोलें तुं।६०।
येरु म्हणे वो विश्वमाते। पूर्णानंदे पुर्ण भरीते।
जरी वोळलिसि मज त्वरिते। तरी उदरातें ययावें।६१।
माझां कुळी जन्मावें। मज दिनातें तारावें।
म्यां तुज खेळवांवें। कंन्या भावें। स्वहृदई।६२।
निज भूमीं आळिंगन। तृप्ती वरि मुखचुंबन।
दर्शन स्पर्शन संभाशण। तुझे चरण। मज मोक्ष।६३।
यैसा वरु त्या भूपति। मागीतला लक्ष्मी प्रति।
येरि दिधला परम प्रीती। इप्सित वृत्ति। फळैल।६४।
मग लक्ष्मी म्हणे नृपासी। तुंवां आरंभावें यज्ञासि।
तेथ लाधसि मज यैसी। पै परियेंसी। वर कंन्या।६५।
पुर्णाहुति प्रांताचां अवस्वरिं। मि प्रकटैन कुंडाभितरी।
असैन तुझा मंदिरीं। करण कुमारि। स्वरुपें।६६।
यैसें बोलिलि महामाया। अति उल्हासु पद्माक्ष राया।
येउनि नगरा आपुलिया। समुदाया मेळविलें।६७।
मग चतुर्विध ब्राम्हण। बोलावि नृपनंदन।
प्रारंभीला माहायज्ञ। अति गहन। विदेहा।६८।
मुळें पाठविलिं सर्वांसी। देवां मानवां पंनगांसि।
ते पातले वेगेसिं। परीवारेसिं। आपुलिया।६९।
मग पाहुनियां सुवेळा। यज्ञ प्रारंभीला नृपाळा।
गगनि लागलिया ज्वाळा। अति वीषाळा। होमाच्या।७०।
असो ययापरी। यज्ञसिधि केला रुषेश्वरीं।
मग पुर्णाहुतिचां अवस्वरीं। आदि कुमारि प्रकटलि।७१।

प्रत्यक्ष कुंडीहुन। यज्ञ पुरुष आपण।
देता जाहाला कन्यारत्न। नृपनंदन आळंगी।७२।
देखोनि आश्चर्य सकळासि। देवां मानवां पंनगांसी।
आणी सकळां रुषी मुनिसि। पद्माक्षासि। वानिति।७३।
म्हणति धन्य नृपनंदना। यज्ञ प्रसादु कंन्यारत्ना।
पैं लाधलासि निधाना। पुण्यपावना। पद्माक्षा।७४।
हे माहाविद्या कुमारि। प्रगटलि तुझां मंदिरिं।
ईच्यानि योगें परत्रीं। असंख्य वरि। सुख भोगीं।७५।
हे वैष्णवि दिव्य मंगळा। अति सुंदर वेल्हाळा।
हे कवणा वोपीसि। बाळा। पैं अकळा। मोहीनि।७६।
तव म्हणे पद्माक्ष राजा। हें कव्हणा न वोपीं जाणीजा।
अस्मत् मंदिरि सहजा। वेदबिजा असैल।७७।
यैसें बोलिला नृपति। तव सकल सुरनर हांसति।
कैसा सज्ञान पाहा क्षीति। बोले निति। वीरुध।७८।
श्लोक - अष्टवर्षा भवेत्कन्या नववर्षाच रोहिणी। दशवशी।
भवेद्गौरी अतिउर्ध्व रजस्वला।१।
यैसीये शास्त्र आज्ञा। ते जाणोनि होतासि अज्ञा।
तरी सांडि या मुढपणा। कन्यादाना। करावें।७९।
नृप नाईकेचि सिकविलें। मग सुरासुर खवळले।
बाळात्कारें प्रारंभीलें। हरण भलें। कुमारि।८०।
तेथ आरंभलें तुबंळ। युध माहा प्रबल।
दैत्य दानव सकळ। मार सबळ। प्रवर्तले।८१।
ब्रम्हादिक सुरवर। ईंद्रादिक पुरंदर।
आणि ते सकळ असुर। पंन्नग नर। कें लेखा।८२।
युध जाहालें दारुण। देव पळाले प्राण घेउन।
नरिं वेचिले प्राण। पंनग भवन। पंनगीं।८३।
राजा पडिला रणी। यज्ञीं प्रवेशु करि राणी।
कंन्या उडि घालि वन्ही। निजस्छानि। आपुलां।८४।

नगरि जाहाली उद्वस। निमाले दैत्य राक्षस।
यज्ञकुंडी सावकाश। पैं निवास। लक्ष्मींचा।८५।
पुढां यया उपरि। उपहत जाहालि नगरि।
मग ते आदि कुमारि। निघे बाहिरि। कुंडौनि।८६।
कुंड प्रदिप्त परी तुष्टी। अदृश्य शक्ति अदृष्टि।
पुर्ण करिति सुरकाष्टी। म्हणौनि ईष्टी। प्रदीप्त।८७।
मग ते विश्व जननि। कुंडा समिप पद्मासनीं।
वज्रासन दृढ घालुनि। निरंजनि। ध्यानस्छ।८८।
यैसि ते परम पद्मा। हृदयसद्मी हृत्पद्मा।
माझारि आत्मया रामा। पैं उत्तमा चिंतित।८९।
जो निजानंद घनस्यामु। जो नित्य पुर्ण पुर्णकामु।
जो पुरविता मनोधर्मु। पुरुषोत्तम। चितित।९०।
यैसि ते आदि कुमारि। तये उद्वसे नगरि।
यज्ञ कुंडा बाहिरि। ता करि। बहु काल।९१।
यैसें लोटले बहुतां दिवसां। तव रावणें प्रसंन्न केलें महेषा।
अमृत मागोनि परेशा। निगे राक्षसापं। समवेत।९२।
पातले मेरू पाठार। ते पद्माक्षाचें नगर।
माहा उद्वस भयासुर। पैं समोर। देखिलें।९३।
पुढां दोघ राक्षस निरुते। चालति शोधित मार्गातें।
दोघ पाठीसीं येते। पैं रावणाते। रक्षीत।९४।
तेव पुढीलां तेहिं राक्षसीं। देखिलें तिये कुमारिसि।
परमतेज लावण्य रासि। रावणासि जाणविलें।९५।
सेवक म्हणति लंकनाथा। इयें कारणे असुरां देवतां।
तुंबळ जाहलें अद्भुता। जालि समस्तां। आटणी।९६।
उद्वस पडिली नगरि। अदृष्ट जाहालि कुमारी।
ते हे पैलये अवस्वरीं। तपातें करि। येकलि।९७।
यैसें परीसोनि दसासीरू। धाविणला वेगवतरू।
कुमारी देखीला समोरू। दुराचारू। राक्षसु।९८।

समीप पातला झडकारी। देखोनि उठीलि कुमारी।
उडी टाकि येकसरी। कुंडामाझारि। विदेहा।९९।
तें देखोनि दशमुखें। कुंडि रिचविलें अमृत कुपीके।
भीतरी पाहे तव देखे। सतेज विसेखें। दिव्य रत्न।१००।
मग तें घेउनि रावणु। निघाला वेगें करूनु।
हर्षे निर्भर होउनु। आला दशाननु। निजपुरा।१०१।
प्रवेशला निज मंदिरीं। उपविष्ट जाहला सिंहासनावरी।
मग बोलाउनियां मंदोदरी। रत्न तिये करीं। वोपीलें।१०२।
तिया घालुनि पेटीये। ठेविलें देव्हार चौंकिये।
देवां समवेत पेटी पुजीत जाये। यैसे क्रमले पाहे। बहुत दीन।१०३।
यया उपरी जे कथा। भार्गउ सांघैल विदेहनाथा।
जनार्दनु विनवि संता। दत्तचित्ता परीसिजे।१०४।
प्रसंगु।२।छ।

प्रसंग ३ रा

मग कोण्हे येके दिवसीं। रावणु परम आनंदेंसि।
बैसला निज सभेसि। उभी पासिं। मंदोदरी।१।
तियेतें म्हणे दसासीरु। ते रत्नपेटी आणा वेगवत्तर।
येरि जाउनियां सत्वर। पैं सुंदर घेउनि ये।२।
ते ठेविली रावणा पुढां। आपण हात जोडुनि कोडां।
येरु महेशपुत्र विर गाढा। म्हणे उघडा। पेटी हे।३।
मग ते मंदोदरी स्वहस्तें। उघडि तये पेटीयेतें।
तवं देखिलें कंन्या रत्नातें। तेजें दिशांतें। व्यापीलें।४।
आश्चर्य जाहालें रावणा। आणीकां मंत्रीयां प्रधाना।
मंदोदरीये आला पान्हा। देखोनि जाणा बाळक।५।
मग कहाडुनियां पेटीतुंनि। कंदोदरी घे उचलुनि।
प्रेमे अलींगुनि चुंबुनि। दे स्नेहें करुनि। स्तनपाना।६।